वैश्वीकरण के सन्दर्भ में किशोरी बालिका शिक्षा की भूमिका

श्रद्धा*

*शोधार्थी, शिक्षा संकाय, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़), भारत
E-mail: shraddha1510m@gmail.com
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19518258
Accepted on: 10/04/2026 Published on: 10/04/2026

सारांश:

वैश्वीकरण सम्पूर्ण विश्व को एक दृष्टि से देखने व परस्पर सक्रिय सहयोग देकर सब का हित करने से है। मासिक धर्म, वैश्वीकरण और शिक्षा के बीच एक गहरा संबंध है, जो स्वास्थ्य, सामाजिक मानदंडों और आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। वैश्विक स्तर पर, मासिक धर्म को अब केवल एक शारीरिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि लैंगिक समानता और मानव अधिकारों के मुद्दे के रूप में देखा जा रहा है। विश्व में बालिकाओं को शिक्षा सुविधाएँ उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वर्तमान में छात्राओ ने अपनी प्रतिभा वा योग्यता की धाक सम्पूर्ण विश्व में स्थापित कर दी है। किशोर बालिका शिक्षा के भूमंडलीकरण ने शिक्षा के अनेकानेक नूतन आयामों को जन्म दिया है। भूमंडलीकरण के कारण ही हमारे पाठ्यक्रम में, हमारी शिक्षण विधियों तथा हमारी परीक्षा प्रणाली में सुधार आया है। आज हम सूचना व सम्प्रेषण की आधुनिकतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग शिक्षा में कर रहे है, मुक्त व् दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दे रहे है, आनलाइन प्रवेश व परीक्षाएं संचालित कर रहे है, ई लर्निंग व वर्चुअल विश्वविद्यालय की संकल्पना कर रहे है। तथा इन्टरनेट की सहायता से दुनिया भर का साहित्य व सामग्री घर बैठे पढ़ रहे है। जिससे हमें मासिक धर्म के समय में एक ही जगह पर अध्ययन की ऑनलाइन पठन सामग्री उपलब्ध हो जा रही है और हम अपने आप को वैश्विक पटल पर रख पा रहे हैं। वैश्वीकरण के दौर में, शिक्षा के माध्यम से मासिक धर्म से जुड़ी चुप्पी को तोड़ना और बेहतर स्वच्छता सुविधाएं प्रदान करना, लैंगिक समानता और शिक्षा की निरंतरता के लिए अनिवार्य है।

मुख्य शब्द: *वैश्वीकरण, किशोरी बालिका शिक्षा।*

प्रस्तवाना:

वैश्वीकरण के युग ने देश-विदेश की सीमाओं को परे रख कर लोगों को एक दूसरे से जुड़ने का बड़ा मौका दिया है। सूचना और संचार तकनीक के क्षेत्र में जिस तेजी से बढ़ोतरी हो रही है उसने दुनिया भर के लोगों के बीच संपर्क को और बढ़ा दिया है। खासकर विश्वविद्यालयों को किस तरह उच्चस्तरीय शिक्षा प्रदान करनी चाहिए, इस पर भी गौर किया

है(उपाध्याय, 2013)। सैटेलाइट और ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम दुनिया को ऑडियो और वीडियो के जरिए एक तार में पिरो दिया है। ग्लोबल इनफॉर्मेशन सुपरहाइवे बनाए गए हैं जिनमें सोशल वेबसाइट भी शामिल हैं। इनके कारण सूचना का प्रसार औऱ ज्ञान तेजी से फैल रहा है(शर्मा,2017)। ऐसी दिलचस्प स्थितियों में भला कोई अकेला और निस्पृह कैसे रह सकता है। लेकिन यह अवसरों के साथ-साथ खतरे भी पैदा कर रहा है। केवल वे ही इससे बच पाएंगे जो अपने आप को हर स्थिति में प्रयोग की बदौलत उन्नत करेंगे। अपने 17वें साल में हालांकि जीएलए ने उच्च स्तरीय शिक्षा में पहचान बना ली और कई राष्ट्रीय संस्थाओं से इसे बेस्ट विश्वविद्यालय घोषित किया जा चुका है, लेकिन जीएलए खुद से मुकाबला करना चाहता है औऱ अब अपना लक्ष्य पहले से कहीं ज्यादा ऊपर तय कर लिया है(www.wikipedia)। वैश्वीकरण के युग ने देश-विदेश की सीमाओं को परे रख कर लोगों को एक दूसरे से जुड़ने का बड़ा मौका दिया है। सूचना और संचार तकनीक के क्षेत्र में जिस तेजी से बढ़ोतरी हो रही है उसने दुनिया भर के लोगों के बीच संपर्क को औऱ बढ़ा दिया है। खासकर विश्वविद्यालयों को किस तरह उच्चस्तरीय शिक्षा प्रदान करनी चाहिए, इस पर भी गौर किया है(सुधीर, 2005)।

भूमंडलीकरण की इस आंधी के आवेग से शिक्षा जगत भी बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। शिक्षा संस्थाए फैशन स्थलों में बदलती जा रही है, भारतीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी अनिवार्य आवश्यकता है सांस्कृतिक पतन तेजी से हो रहा है तथा इतिहास के नायको के स्थान पर हैरी पाटर जैसे किरदार हावी हो रहे है । ऐसा नहीं है कि भूमंडलीकरण की अवधारणा पर जोर देने के कारण शिक्षा जगत में केवल नकारात्मक परिणाम ही सामने आये है। अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में कुछ शिक्षा संस्थाओ ने अपने शैक्षणिक स्तर को सुधार कर विश्व की श्रेष्ठतम शिक्षा संस्थाओ में अपने को शामिल किया है तथा उनसे निकले छात्र-छात्राओ ने अपनी प्रतिभा वा योग्यता की धाक सम्पूर्ण विश्व में स्थापित कर दी है । शिक्षा के भूमंडलीकरण ने शिक्षा के अनेकानेक नूतन आयामों को जन्म दिया है(गुप्ता,2009)। भूमंडलीकरण के कारण ही हमारे पाठ्यक्रम में, हमारी शिक्षण विधियों तथा हमारी परीक्षा प्रणाली में सुधार आया है। आज हम सूचना व सम्प्रेषण की आधुनिकतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग शिक्षा में कर रहे है, मुक्त व् दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दे रहे है, आन लाइन प्रवेश व परीक्षाएं संचालित कर रहे है, ई लर्निंग व वर्चुअल विश्वविद्यालय की संकल्पना कर रहे है। तथा इन्टरनेट की सहायता से दुनिया भर का साहित्य व सामग्री घर बैठे पढ़ रहे है। यह सब शिक्षा के वैश्वीकरण की दिशा में उठाये कदमो का ही परिणाम है। विश्व व्यापर संगठन (WTO) के समझौते पर भारत के द्वारा हस्ताक्षर करने के फलस्वरूप शिक्षा भी व्यापार की एक वस्तु/सेवा बन गई है तथा अन्य वस्तुओ के समान इससे सम्बंधित विभिन्न सामग्रियों वे सेवाओ का सम्पूर्ण विश्व में आयात-निर्यात प्रचुरता से तथा मात्र आर्थिक लाभार्जन के लिये किया जा रहा है। शिक्षा को व्यापार वस्तु मानना भारतीय परंपरा के विपरीत होने के कारण

इस सम्बन्ध में अनेक आपतियां की जा रही है। शिक्षा का भविष्य क्या होगा इसका अनुमान लगाना निःसंदेह आज एक कठिन कार्य बन गया है।

किशोरावस्था की छात्राओं में मासिक धर्म परिवर्तन एवं विकास

मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है, यह अवस्था युवावस्था एवं परिपक्वास्था तक रहती है यह बाल्यावस्था तक प्रौढ़ावस्था के मध्य संधि की प्रक्रिया है। क्रो एवं क्रो ने कहा है, "किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है"। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इस अवस्था की अवधि 12 वर्ष से 18 वर्ष की आयु तक चलती है इसकी शुरुआत बालिकाओं में 12 वर्ष से और बालकों में सामान्यत 13 वर्ष से होती है। इस अवस्था में किशोर एवं किशोरी में भावात्मक परिवर्तन होते है जिसमें उन्हे समझना मुश्किल होता है, उनका व्यवहार विरोधी हो जाता है उन्हे समझना कठिन हो जाता है इस अवस्था में किशोरियों में अपने मूल्य और संवेग में दुविधा होती है। किलपैट्रिक जी के अनुसार, "इस बात में कोई संदेह नहीं है कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है"। (गुप्ता,शिक्षा मनोविज्ञान)

किशोरावस्था की विशेषता

किशोरावस्था को शारीरिक विकास एवं मानसिक विकास कासर्वश्रेष्ठकाल माना गया है इस काल में अनेक भौतिक परिवर्तन दिखाई पड़ते है जैसे- बालिका के शारीरिक ढांचे में दृढ़ता,कूल्हे एवं स्तन का विकास, कल्पना शक्ति का विकास, मानसिक विकास,विरोधी मानसिक दिशा परिवर्तन,किशोर के दाढ़ी मूंछ में परिवर्तन,तर्क शक्ति का विकास,दिवास्वप्न का विकास होता है। इस अवस्था में किशोर एवं किशोरी का लगभग सभी दिशाओं में परिवर्तन होता है जो की इस प्रकार है -:

I. **शारीरिक विकास:-** प्रारंभिक किशोरावस्था के दौरान किशोरियों में शारीरिक परिवर्तन 9 से 14 वर्ष की आयु के बीच दिखाई पड़ता है, क्योंकि लड़कियां किशोरावस्था में कदम रखती है, इसमें कई तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं। बाल उगना, स्तनों का विकास, कूल्हे का विकास, उंचाई एवं मोटापा इत्यादि परिवर्तन होते हैं।

II. **मासिक धर्म की शुरूआत**:- मासिक धर्म एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक यौन परिपक्व लड़की जो कि प्रारंभिक किशोरवस्था की ओर परिपक्व होने की प्रथम अवस्था में लड़कियों को हर महीने आमतौर पर तीन से चार दिन तक यह मासिक धर्म होता है जो महीने में एक बार होती है। मासिक धर्म की पहली घटना को मिनार्चे कहा जाता है और यह उस उम्र को चिंहित करती है, जब लड़कियां यौन परिपक्व हो जाता है। आमतौर पर मिनार्चे उस वक्त शुरूआत होती है, जब लड़कियां प्रारंभिक किशोरावस्था में उच्च प्राथमिक शिक्षा में होती हैं।

III. **शैक्षणिक विकास:-** प्रारंभिक किशोरावस्था के दौरान किशोर एवं किशोरियों की आयु 9 से 14 वर्ष की होती है, जिसमें कि उच्च प्राथमिक शिक्षा में छात्राओं के शैक्षणिक विकास में कक्षा परिवर्तन होता है। छात्राएं या तो कक्षा 6 से

7 में या कक्षा 8 में पढ़ती हैं चूँकि प्रारंभिक किशोरावस्था कि शुरूआत उच्च प्राथमिक शिक्षा में कक्षा 8 में प्रवेश के दौरान होता है, जिसमें छात्राएं पढ़ती हैं एवं आगे पढ़ने के साथ-साथ शैक्षणिक विकास में कई तरह के विषय पढाये जाते हैं। जिसमें कि हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, नागरिक शास्त्र, भूगोल, विज्ञान और संस्कृत यह सभी पढ़ने को मिलते हैं। छात्राओं में आयु के साथ-साथ प्राकृतिक परिवर्तन एवं शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ छात्राओं की शैक्षिक विकास भी होते हैं तथा ज्ञान एवं उपलब्धि की विकास के लिए अग्रसर होते हैं।

IV. **सामाजिक एवं भावात्मक विकास**:- किशोरी किशोरावस्था के दौरान अपनी पहचान की भावना के साथ संघर्ष करते हैं। इस आयु स्तर पर वो अपनी पहचान बनाने तथा समाज में कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होकर आगे बढ़ना चाहते हैं इस दौरान नई नई सामाजिक भूमिका अदा करनी होती हैताकि उन्हें समाज में एक पहचान एवं नए मूल्य तथा नेताओं के चयन में नेतृत्व करने के लिए आगे रहने की चाह इस अवस्था में होती हैं एवं भावनात्मक विकास में इस अवस्था में किसी की बातों को जल्दी बुरा मान जाना, बहुत जल्दी खुश हो जाना, बहुत जल्दी दुखी हो जाना, दिमाग में किसी बातों को ज्यादा बढ़ाकर ले लेना तथा गलत कदम तुरंत उठा लेना यह सभी भावात्मक परिवर्तन किशोरावस्था के दौरान होते हैं।

V. **संज्ञानात्मक विकास:-** शुरूआती किशोरावस्था में किशोर अमूर्त विचार के लिए एक बढती क्षमता दिखाते है, उनकी बुद्धि का विकास होता है और ज्ञान अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, नैतिक सोच की गहराई बढती है एवं नए-नए शोध कार्य की ओर प्रवृत्त होने लगते हैं तथा दिमाग में प्रश्न एवं उन प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु अमूर्त विचार करने के लिए उनकी क्षमता में वृद्धि होती जाती है।

VI. **व्यवहार में भिन्नता:-**किशोर एवं किशोरी की व्यवहार में भिन्नता आती है वे अपने अब सक्षम समझने लगते है उन्हें किसी भी बात में तुरंत गुस्सा हँसी आती है।

VII. **अधिगम समस्या:-**मासिक धर्म में छात्राओं को जब स्कूल में जाती है तो उन्हे पढ़ने में एवं बैठने में दिक्कत होती है पढ़ाई करने के दौरान मानसिक एकाग्रकता नहीं हो पाती है बार-बार ध्यान मासिक धर्म के कारण कपड़े में ही रहता है और ध्यान विचलित होने से अधिगम समस्या होती है।

VIII. **मनोशारीरिक समस्या:-**मासिक धर्म में शारीरिक दर्द से छात्राओं को मानसिक तनाव होने लगता है जिसमे की दर्द से स्कूल में चिंता, भय, दर्द, गुस्सा, चिड़चिड़ापन,मानसिक दबाव,प्रेरणाहीन समझना खुद को, उल्टी लगना, मूड बदलना, बार-बार उतार चढ़ाव होना, भूख नहीं लगना, सर में दर्द होना यह सभी परिवर्तन होते है जब मासिक धर्म की शुरुआत होती है।

IJGMRA | ISSN (online): 3107-6483
January-March 2026 | Vol. 1 | Issue 4

वैश्विकरण (ग्लोबलाइजेशन) के सकारात्मक प्रभाव

- ❖ वैश्विकरण या ग्लोबलाइजेशन ने भारतीय विद्यार्थियों और शिक्षा के क्षेत्र को इंटरनेट के माध्यम से विदेशी विश्वविद्यालयों को भारतीय विश्वविद्यालयों से जोड़ा है, जिसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रान्ति आई है।
- ❖ वैश्विकरण या ग्लोबलाइजेशन के द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र भी प्रभावित हुआ है, इसके कारण सामान्य दवाईयाँ, स्वास्थ्य को नियमित करने वाली विद्युत मशीन आदि से उपलब्ध हो जाती है।

वैश्वीकरण का शिक्षा पर प्रभाव

शिक्षा वैश्वीकरण को प्रभावित करती है	वैश्विकरण शिक्षा को कैसे प्रभावित करती है
1. शिक्षा सर्वांगीण विकास करती है और यह जागरूकता लाकर हमें विश्व पटल से जुड़ने में मदद करता है। 2. शिक्षा हमें भौगोलिक सीमाओ का ज्ञान कराता है जिससे हम एक देश से दूसरे देश में शिक्षा ग्रहण करने विश्वविद्यालयों में जाते है। 3. शिक्षा ही है जो हमें विश्व बंधुत्व का मूल मन्त्र देती है। 4. शिक्षा हमें विश्व के कल्याण सद्भाव , स्नेह , परोपकार , का गुण विकसित करती है। 5. आज शिक्षा ही है जो सोशल नेटवर्क के द्वारा हम कंही से भी वार्तालाप , नीति निर्माण परिचर्चा करने में सफलीभूत बनती है। 6. शिक्षा हमें विश्व के शैक्षिक प्रणाली को समझने में मदद करती है जिससे हम अपनी शिक्षा नीति का निर्धारण बनाते रहते है जिससे सकारात्मक प्रतिस्पर्धा विश्व स्तर पर कर सके। 7. शिक्षा के द्वारा हम विश्व स्तर पर किये गए शोध कार्यो की जवाबदेही को निर्धारित करते है। 8. शिक्षा हमें आतंकवाद को हतोत्साहित करने का सम्बल देती है। **9.** यह सांस्कृतिक भेदभाव को मिटाती है जिससे हम पर-संस्कृति करण के गुणों को अपनाते हैं	1. वैश्विकरण का प्रतिफल है कि प्रत्येक देश की शिक्षा को अलग–अलग समझने का अवसर प्रदान करता है। 2. वैश्विककरण ही है जो शिक्षा में प्रतिस्पर्धात्मक सकारात्मक रूप से ले आता है। 3. वैश्विकरण के द्वारा यह संभव हो सका की ज्ञानी लोगो का एक देश से दूसरे देश में आना-जाना लगा रहा अतः इसने शिक्षा के संप्रत्यय में दिनों दिन बदलाव लाया। 4. वैश्विकरण के द्वारा विचारो की अभिमान्यताओ को शिक्षा में स्थान दिया गया। 5. भारत ने वैश्विकरण के मूल मंतव्य को प्राचीन काल से माना तभी यंहा विविध धर्म आये और यंहा के गुणों को अपने देश में सम्पेषित किया। 6. भौगोलिक दूरियों को मिटाने का काम वैश्विकरण के द्वारा सफल हो सका जिससे हम व्यापार को प्रोत्साहित कर सकें। 7. वैश्विकरण का प्रतिफल है कि हम पृथिवी की रक्षा के लिए नित नए संकल्प लेते है जिससे शिक्षा हमारी सफल हो सके। 8. यह विभिन्न व्यापारों या व्यवसायों का पूरे संसार के विश्व बाजार में विस्तार करना है।

	9. ग्लोबलाइजेशन पूरे विश्वभर में किसी वस्तु को फैलाने से संबंधित है। अतः यह शिक्षा को भी प्रभावित करता है।

वैश्विक परिदृश्य में एनईपी 2020 के प्रमुख पहलू:

- **उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण:** एनईपी 2020 छात्रों और शिक्षकों की दोतरफा आवाजाही को बढ़ावा देता है। उच्च श्रेणी के विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में परिसर स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और शीर्ष भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान विदेशों में परिसर स्थापित कर रहे हैं।
- **पाठ्यक्रम और कौशल का सामंजस्य:** रटने वाली शिक्षा से दूर हटते हुए, यह नीति 21वीं सदी की वैश्विक कौशल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुविषयक शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित/डिजिटल एकीकरण को प्राथमिकता देती है।
- **वैश्विक नागरिकता और स्थानीय जड़ें:** एनईपी 2020 भारतीय ज्ञान प्रणालियों और संस्कृति को एकीकृत करते हुए वैश्विक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और सतत विकास लक्ष्य 4 (एसडीजी4) का पालन करने के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।
- **डिजिटल परिवर्तन:** यह नीति भारतीय शिक्षा और वैश्विक डिजिटल रुझानों के बीच के अंतर को पाटने के लिए डिजिटल बुनियादी ढांचे, ऑनलाइन शिक्षा और व्यक्तिगत शिक्षण पर जोर देती है।

वर्तमान चुनौतियाँ और मुख्य क्षेत्र:

- **अवसंरचना एवं कार्यान्वयन:** ग्रामीण क्षेत्रों में सुदृढ़ डिजिटल अवसंरचना की आवश्यकता और उदाहरण के लिए, अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) का प्रभावी कार्यान्वयन।
- **गुणवत्ता आश्वासन:** यह सुनिश्चित करना कि जैसे-जैसे प्रणाली, उदाहरण के लिए, एक बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण की ओर बढ़ती है, संस्थानों में गुणवत्ता एक समान बनी रहे।
- **समानता:** डिजिटल विभाजन को पाटना और विभिन्न क्षेत्रों में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को बढ़ाना, जो वर्तमान में 27.1% है।

किशोरी बालिका शिक्षा

मासिक धर्म (Menstruation), वैश्वीकरण (Globalization) और शिक्षा (Education) के बीच एक गहरा संबंध है, जो स्वास्थ्य, सामाजिक मानदंडों और आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। वैश्विक स्तर पर, मासिक धर्म को अब केवल एक शारीरिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि लैंगिक समानता और मानव अधिकारों के मुद्दे के रूप में देखा जा रहा है। जोकि निम्नवत है-

मासिक धर्म और शिक्षा का अंतर्संबंध

- **शिक्षा में बाधा:** उचित मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (Menstrual Hygiene Management - MHM) की कमी के कारण, विशेषकर विकासशील देशों में, लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं या अनुपस्थित रहती हैं।
- **स्वास्थ्य और आत्मविश्वास:** स्कूलों में मासिक धर्म के प्रति जागरूक शिक्षा (Menstrual Education) की कमी से लड़कियाँ इसे छिपाती हैं और शर्म महसूस करती हैं, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य और पढ़ाई को प्रभावित करता है।
- **समाधान के रूप में शिक्षा:** जब किशोरियों को उनके शरीर में होने वाले प्राकृतिक बदलावों (Menarche) के बारे में वैज्ञानिक और व्यावहारिक जानकारी मिलती है, तो वे शर्म की भावना को दूर कर आत्मविश्वास से अपनी पढ़ाई जारी रख पाती हैं।

वैश्वीकरण का प्रभाव (Globalization Impact)

- **नीतिगत प्राथमिकता:** वैश्वीकरण के कारण मासिक धर्म स्वच्छता एक वैश्विक एजेंडा (Global Agenda) बन गया है, जो 'एजेंडा 2030' के तहत सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) से जुड़ गया है।
- **सांस्कृतिक परिवर्तन:** वैश्वीकरण ने मासिक धर्म से जुड़ी पारंपरिक वर्जनाओं (Taboos) और रुढ़िवादी मान्यताओं को चुनौती दी है, जिससे दुनिया भर में इस मुद्दे पर चर्चा आसान हुई है।
- **उत्पादों तक पहुँच:** वैश्विक व्यापार के कारण सैनिटरी उत्पादों तक पहुँच बढ़ी है, हालांकि अभी भी कम आय वाले परिवारों में इनका उपयोग सीमित है।

चुनौतियाँ और आगे की राह

- **बुनियादी ढांचे की कमी:** कई स्कूलों में अभी भी स्वच्छ शौचालयों, पानी और सैनिटरी पैड के निस्तारण की उचित सुविधा नहीं है।
- **शिक्षक की भूमिका:** केवल वैज्ञानिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि 'पीरियड पॉजिटिव' माहौल बनाने के लिए शिक्षकों को भी प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

- **व्यापक शिक्षा:** शिक्षा में केवल जीवविज्ञान (Biology) ही नहीं, बल्कि प्रबंधन (Management) और भावनात्मक पहलुओं को भी शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष:

वैश्वीकरण के दौर में, शिक्षा के माध्यम से मासिक धर्म से जुड़ी चुप्पी को तोड़ना और बेहतर स्वच्छता सुविधाएं प्रदान करना, लैंगिक समानता और शिक्षा की निरंतरता के लिए अनिवार्य है। जनवरी 2026 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में **मासिक धर्म स्वास्थ्य और स्वच्छता (MHH) को मौलिक अधिकार** के रूप में मान्यता दी है, जो सीधे तौर पर शिक्षा के अधिकार से जुड़ा है। अब मासिक धर्म स्वास्थ्य केवल एक कल्याणकारी मुद्दा नहीं, बल्कि एक **बाध्यकारी संवैधानिक अधिकार** है, जो शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।

मुख्य बिंदु:

- **संवैधानिक अधिकार:** कोर्ट ने कहा कि मासिक धर्म स्वास्थ्य अनुच्छेद 21 के तहत जीवन, गरिमा और शारीरिक स्वायत्तता के अधिकार का अभिन्न अंग है।
- **शिक्षा से जुड़ाव:** मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता सुविधाओं की कमी के कारण छात्राओं को स्कूल छोड़ने या अनुपस्थित रहने पर मजबूर होना, उनके शिक्षा के अधिकार (अनुच्छेद 21A) और समानता (अनुच्छेद 14) का उल्लंघन है।
- **विद्यालयों के लिए निर्देश:** सर्वोच्च न्यायालय ने सभी सरकारी और निजी स्कूलों को कक्षा 6 से 12 तक की लड़कियों के लिए मुफ्त बायोडिग्रेडेबल सैनिटरी पैड उपलब्ध कराने और लिंग-विभाजित शौचालय (Gender-segregated toilets) सुनिश्चित करने का आदेश दिया है।
- **वैश्वीकरण और संवेदीकरण:** यह निर्णय वैश्विक स्वास्थ्य मानदंडों और 'पीरियड डिग्निटी' (Period Dignity) को भारतीय शैक्षणिक व्यवस्था में लागू करता है, ताकि जैविक कारणों से कोई भी छात्रा शिक्षा से वंचित न रहे।

सन्दर्भ:

- उपाध्याय, पी. (2013). *भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियां*. शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, एस. पी., & गुप्ता, ए. (2009). *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं*. शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, एस. पी., & गुप्ता, ए. (2011). *अनुसंधान संदर्शिका*. शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, एस. पी., & गुप्ता, ए. (2013) *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*. शारदा पुस्तक भवन.
- *देवांगन, एम. (2020).* मेन्स्ट्रुअल हाईजिन एंड एडुकेशनल चैलेंज एमंग रूरल गर्ल इन छत्तीसगढ़. *छत्तीसगढ़ जर्नल ऑफ़ एजूकेशन, 12*(2), *58-65.*

- पाण्डेय, आर. (2013). *शिक्षा के मूल सिद्धांत*. अग्रवाल पब्लिकेशंस.
- *बार्कर, एस. (2018).* सइकोसोमैटिक इस्युज एमंग स्कूल-गोइंग गर्ल ड्यूरिंग मेंसुरेशन. *जर्नल ऑफ़ हेल्थ साइकोलाजी, 23*(5), *671-678.*
- शर्मा, एम. (2017). शिक्षा में सूचना और सम्प्रेषण तकनीकी. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल फॉर मल्टीडिशिप्लिनरी स्टडी. पृष्ठ 42-47.*
- सोम्मर, एम., & सिन्हा, एम. (2017). मेन्स्त्रुअल हाईजिन मैनेजमेंट एंड एजूकेशन:ए क्रास -कंट्री एनालिसिस इन इंडिया एंड बांग्लादेश. *जेंडर एंड डेवलपमेंट, 25*(2), *173-186.*